

2433 I

236
Paudava
Gita

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ ॥ **लोमहर्षणमुवाच ॥** प्रह्लाद
नारद यशशर्यु राडरी कथा सां म्वरीष शुक्लेशो न कभीष्मको ह्य ॥ रुक्मांगद अर्जुन वसि
ष्ठ विभीषण आसता न हं परम भागवतां न मामि ॥ १ ॥ प्रह्लाद भया नारद भया य
शशर भया पुराडरी कभया व्यास भया अम्वरीष भया शुक्ल भया शो न क भया भीष्म
भया ॥ रुक्मांगद भया अर्जुन भया वसिष्ठ भया विभीषण भया इत्यादि श्री भगवा
न नमस्कार गर्ह्य ॥ १ ॥ **धर्मो रक्षति ॥** धर्मो विवर्धतु शुद्धि छिर कीर्तनेन पाथं प्रणय
तिष्ठ कोदर कीर्तनेन ॥ शत्रुर्विनश्यति धनं जय कीर्तनेन माद्री सुतो कथयतां

भवतिरोगः॥ युधिस्थिरकाकीर्त्तनागयाधर्मवृद्धिदुष्टं न भीमसेनकाकीर्त्तनाग
यायाधनवृद्धं न अर्जुनकाकीर्त्तनागयाशत्रुका नाशं दुष्टं न कुलसहदेवका
कीर्त्तनागया रोगका नाशं दुष्टं न भनिधर्मले आज्ञागर्दभया॥ २ ॥ वृद्धावाच
॥ येमानवविगतसगयययराज्ञा नाशयसां सुरगुहं शततं स्मरन्ति॥ ध्यानेन ते नरः
तत्किल्बिषवेदनास्तिभावः॥ पयोधरसंनयुनः पिवन्ति॥ ३ ॥ रागद्वयनभया काम
नुष्यलेदेवताकायनिगुरुयस्ता श्रीकृष्णकाभजनगर्वा॥ तस्को संयुगाकायन
दुष्टं न केरीमह्तारीकीदूदयानगर्नुयदेनभनिवृत्ताले आज्ञागर्दभया॥

॥ ३ ॥ इदुवाच॥ नारायणो नाम नरो नराणां प्रसिद्धवोरः कथितः पृथिव्यां॥ अने
कजन्मान्नितायसं चयं हरतश्चेयं स्मृतिमात्रकेवलं॥ ४ ॥ नारायणका नाम भ-
याकाचोरलोकमाप्रसिद्धमया का तस्को स्मरणागयाउपान्त॥ अनेकजन्मकाया
यमयायनिहर्नगर्दुष्टं न भनिइन्दुले आज्ञागर्दभया॥ ४ ॥ युधिस्थिरउवाच॥ मेः
धश्यामंगीतकोथेयवामं श्रीवत्सांकं कोस्तुभोजाधितांगं॥ पुरापात्मानं युगदुरिका-
यताहं विष्णुवंदे सर्वलोकैकनाथं॥ ५ ॥ मेघकेश्यामवर्गानयाकापीताम्वर्यैः
श्याकाकोस्तुभमणिलुगायाकाहुदयमाश्रीवत्ससंयाकात्रैलोककास्वामीयस्ता

कर्मप्रणामगर्भुननियुधिष्ठिरले आज्ञागर्भया ॥ ५ ॥ श्रीमसेन उवाच ॥ जः
मममासवराचराधराविद्याराकोद्याखिलविश्वमूर्तिना ॥ समुद्धतायेन वराह
विद्यासमेख्यं भूभगवान् प्रसीदतु ॥ ६ ॥ जलविषये दुष्काकी दृष्टिवीकनव
राहको ह्यमईडां कातुया मारविउद्धारगथायस्तु श्रीभगवान् मविषये प्रशंनः
कोलाभनिभोमसेनले आज्ञागर्भया ॥ ६ ॥ अर्जुन उवाच ॥ अचिंत्यमव्यक्तमनन्त
दुर्लभविदुषुकारणभूतभावितां ॥ त्रैलोक्यविस्तारविभावभावितां हरिं प्रयत्नो
सिगतिमं ॥ ७ ॥ कसेले चिंतनागर्भुनशक्ताजस्को अंतयनिष्ठेन न कहि

लेनाशनुह्यासवैविषये यत्नभयाका संसारको भावमा लाग्याका ॥ त्रैलोक्यवठउ
नाभाकारणभयाका महात्माका गतिभयाका यस्तु श्रीभगवान् का शरणप्राप्तिभ
यो ननिअर्जुनले आज्ञागर्भया ॥ ७ ॥ नकुल उवाच ॥ यदिगमनमधस्तात्कर्मयाः
एतदुदकाय विवकुलविहीने जन्ममेयक्षि कीरे ॥ किमिशतमसि गत्वा तंगता भंतरा
स नवतुममहदस्थिकेशवे भक्तिरेका ॥ ८ ॥ हेनाथ कालका वशलेयो शरीरगिरि
नेवरातरयनिअधोयोनि ॥ कीटयतंगमाशययोनिमाजाला भगवान् का चरणका
भाकेन धुटसमनिनकुलले आज्ञागर्भया ॥ ८ ॥ सहदेव उवाच ॥ तस्य यज्ञवरा

हस्वविष्णोरनुलतेजसः ॥ प्रणामं ये यि कुर्वन्ति ते भो धीरु न मो नमः ॥ ८ ॥ अनुलतेज
 भया काये स्नादरूप श्री कृष्ण लाई ॥ प्रणामः जौ न गच्छु उ मे लाई मेरा प्रणाम छु भनि
 सहदेव ले आशा गर्द भया ॥ ९ ॥ कुनिरुवा ॥ स्वकर्मफल निर्दयं यां यां यो निवृ
 जामाहम् ॥ तस्यां तस्यां हृषीकेश त्वयि भक्तिर्दृष्टास्तु मे ॥ १० ॥ हे प्रभो मेरा कर्मलि भया
 काजू न्योनि विषये जाला ॥ ते योनि विषये भगवान्का चरणामादछ भक्ति छोडुनु
 नय नो स भनि कुन्तिले विनिगर्द भया ॥ १० ॥ माधुवा ॥ कृष्ण रता कृष्ण मनुस्मरं
 तिरात्रोच कृष्ण पुनरुत्थिते च ॥ ते भिन्न देहा प्रविशन्ति कृष्ण हृदयि यथा मंत्रुतुं हता

श्री ॥ ११ ॥ कृष्ण विषये लागा कामे ले रात्रि माउथ्या मा सुत्या मा जति घेर अस्सर भयो
 उत्रि घेर श्री कृष्ण का स्मरण गर्दना ॥ न स्तो अग्नि मा वीहि विलाउं कुन स्ते श्री कृष्ण का
 शरी माली नहुं छु भनि माडीले श्री कृष्ण का चरणामा विनिगर्द भया ॥ ११ ॥ दोयधु
 वा ॥ कीटेषु यस्मिन् भुङ्गेषु शरीर्येषु रक्षयिशा च मनुजेष्वपि यत्र तत्र ॥ ज्ञानोस्तु
 मे भवतु केशव तत्प्रसादात्तयेव भक्तिरचला यन्निवारिणी च ॥ १२ ॥ किरायं क्षि
 म्भुग सर्वग क्षमयिशा च मनुष्ययस्ते योनि मा जन्म हवत् ॥ ते यनि भगवान्का
 प्रसाद ले भगवान्का भक्ति अचल हवत् स भनि दोयतिले श्री कृष्ण का चरणामा वि

तिगर्दभया ॥ १२ ॥ **शुभदोवाच ॥** एकोहि कृष्णसुकुतप्रणामी दशश्वमेधीनदिया-
 तितुल्य ॥ दशश्वमेधीपुनरेति जन्म कृष्णप्रणामीनपुनर्भवाय ॥ १३ ॥ एकवेरश्रीकृ-
 णलाईप्रणामगन्थाकोरदशपलूटअश्वमेधयज्ञगन्थाकोएकेहोतर ॥ अश्वमे-
 धयज्ञगन्थालेकेरीकेरीजन्मलितुयछुश्रीकृष्णलाईप्रणामगन्थालेकेरिजन्मलि-
 तुयदेनभनिशुभदोलेश्रीकृष्णकाचरगामाविनिगर्दभया ॥ १३ ॥ **अभिमन्युहवा-
 च ॥** गोविंदगोविंदहरेमुरारेगोविंदगोविंदमुकुंदकृष्ण ॥ गोविंदगोविंदरथांगधारो
 गोविंदगोविंदनमामिनित्यं ॥ १४ ॥ हेगोविंदहेहरेहेमुरारेगोविंदमुकुंदहेकृष्ण ॥ हे

गोविंदहेरथांगधारोहेगोविंदभनियस्तानामावलीजयतेरहुनुउस्ताइछाचाहिंध
 भनिअभिमन्युलेश्रीकृष्णकाचरगामासधैवावसरभनिविनिगर्दभया ॥ १४ ॥ **धृष्ट-
 दुमन्युवाच ॥** श्रीरामनारायणवासुदेवगोविंदवैकुण्ठमुंदकृष्ण ॥ श्रीकेशवानंतन-
 सिंहविष्णोमांवाहिसंसारभुजंगदुष्टात् ॥ १५ ॥ हेरामहेनारायणहेवासुदेवहेगो-
 विंदहेवैकुण्ठहेमुकुंदहेकृष्ण ॥ हेकेशवहेअनंतहेनृसिंहहेविष्णोसंसारभुजं-
 गदेविमलाईरसागरभनिइतिभगवान्काचरगामाधृष्टदुमन्युलेविनिगर्दभ-
 या ॥ १५ ॥ **सात्यकीहवाच ॥** अपमेयहरेविष्णोकृष्णरामोदरासुत ॥ गोविंदनंत

सर्वेश्वरसुदेवनमोस्तुते ॥ १६ ॥ जस्को प्रणामयनिंदे नहेहरेहे विष्णोहे कृष्णहे रामो
 हरहे अस्तुत ॥ हे गोविंदहे अनंतहे सर्वेश्वरहे वासुदेव भगवान् लाई मेरा प्रणाम शुभः
 निमायकीले विंतिगर्दभया ॥ १६ ॥ **जयउवाच ॥** वासुदेवं परित्यज्य नान्यदेवमु
 यासते ॥ तृयितो हवीतीरे कूपं खनति दुर्मति ॥ १७ ॥ वासुदेव लाई छाडि अहं देवता
 काउपाहाग न्यागछत ॥ गंगातीरमातृवालाग्याने निवातु वाधन्यायसे हो भानिउ
 खवले श्रीकृष्णकाचरणमा विंतिगर्दभया ॥ १७ ॥ **धौम्यउवाच ॥** अथांसमीपेशय
 नाशने गृहे दिवाचरात्रोपधिगच्छताच ॥ यदिस्त्रिकंचित्सुकृतं कृतं मया जनार्द

नस्तेन कृतेन तु ध्यतु ॥ १८ ॥ सुतामाउत्थामाजलमास्थलमादिनमारात्रिमा हिंडामा ॥
 मैले गयाकासुकर्मले श्रीभगवान्प्रशंनहुनु भनिधौम्यले आज्ञागर्दभया ॥ १८ ॥ **सं**
जयउवाच ॥ आर्त्ताविधेराणशिक्षिताश्च भीताघोरेभुये व्याधियुवर्त्तमानाः ॥ सकीर्त्त
 नागयणशब्दमात्रं विमुक्तदुःखाः सुखिनो भवन्ति ॥ १९ ॥ खिने भयामावनविषयेया
 धुचोरादिकले ॥ काविषये नारायणकानामकीर्त्तनागर्दमासुखहुंछ भनिसं
 जयले श्रीकृष्णकाहजूरमा विंतिगर्दभया ॥ १९ ॥ **अकूरउवाच ॥** अहं हि नारायणद
 सदासदासम्यदासोस्मि हि सदास ॥ अन्योन्यमीशे जगतां नाराणां तस्मादिदं वक्ष्यते

शेषिलोके ॥ २० ॥ नारायणकादासद्वन्द्वस्तोदासकायनिदासमुद्वन्द्वस्तन्यतुभं
 दातैधन्यद्वन्द्वनभनिअकूरले श्रीकृष्णकाहाविंतिगर्दभिया ॥ २० ॥ **विदुरउवाच ॥** वासु
 देवस्य ये भक्तो शांतास्तद्वन्द्वतमानसा ॥ तस्य दासस्य दासो हं भवेन्नभानिजन्मनि ॥ २१ ॥
 वासुदेवकाजो भक्तजन्मद्वन्द्वन ॥ तनकादासकायनिदासजन्मजन्मविषये मुद्वन्द्वनभ
 निविदुरले आशागर्दभिया ॥ २१ ॥ **भीष्मउवाच ॥** विपरीतेषु कालेषु परित्रांगेषु वं
 धुषु ॥ गहिमां ह्यया कृष्णशरणगतवत्सल ॥ २२ ॥ विपत्तिमा आक्रासंगिहृले
 द्वाद्यामा ॥ यस्मा कालमाहेशरणगतकृपाधारिमलाई यस्मा संकष्टमारणागरभ

निभीमले आशागर्दभिया ॥ २२ ॥ **द्रोणउवाच ॥** ये ये हताश्वक्रधरेण देवास्ते लोकाना
 थे न जनार्दननेति ॥ ते ते गता वै नित्यं मुगगा क्रोधो धिदेवस्य वरेण तुल्यं ॥ २३ ॥ शंख
 चक्रगदायुधध्याकात्रे लोकनाथ जनार्दनने ॥ जून जून देवमार्द्धन ते ते संपूर्ण
 विष्णुपुरीमा जंघन श्रीभगवात्कारी स्य निवरतुल्यं दुद्वन्द्वनभनिद्रोणले श्रीकृष्ण
 काचरणमाविंतिगर्दभिया ॥ २३ ॥ **कृपावार्थउवाच ॥** यजन्मनि स्फुल्लमिदं मधुकै
 रभारे मत्प्रार्थनैकमदनुग्रहस्य एव ॥ त्वद्भक्त्यभक्त्यपरिवारकभक्त्यभक्त्यभक्त्यस्य
 भक्त्य इति मां स्मर लोकनाथ ॥ २४ ॥ भगजन्मकोयलमेले प्रार्थनागयाकोयनिमः

विषये ह नूर का कृपा यनि ॥ ह नूर का चाकर मलाई जां नु ह वस्त्र न नि कृपा चा यलि श्रीः
 कृष्ण का चरणा मा विनि ग दर्श नया ॥ २४ ॥ **अश्वत्थामा वावा ॥** गोविंद के श व ज नार्दन
 वासुदेव विश्वेश विश्वमधुसूदन विश्वरूप ॥ श्रीपद्मनाभ पुरुषोत्तम पद्मनेत्र ना
 रायणाय नमः सिंह नमो नमस्ते ॥ २५ ॥ हे गोविंद हे केशव हे जनार्दन हे वासुदेव हे वि
 श्वेश हे विश्व हे मधुसूदन हे विश्वरूप ॥ हे पद्मनाभ हे पुरुषोत्तम हे पद्मनेत्र हे नाग
 रायण हे अच्युत हे सिंह यस्ताना मा वलि नया का त पाई लाई नमस्कार ह नमनि अश्व
 त्थामा ले श्री कृष्ण का चरणा मा विनि ग दर्श नया ॥ २५ ॥ **कल्याण वावा ॥** नानंद दामिन श्रु

गोमिन चिंतया मिना न्यस्मरामिन भजामिन आश्रयामि ॥ एकत्व दीय चरणा दय मादरेः
 रा श्री श्री निवास पुरुषोत्तम देहि दास्यं ॥ २६ ॥ तस्मा ना वंदे वि अर्क केहि बोले न चिंत
 ना यनि ग र्दे न अर्क स्मरणा यनि ग र्दे न भजन यनि ग र्दे न आश्रय यनि ग र्दे न ॥ त पा
 ई का चरणा दी मा एकत्व आदर भाव ग हृ श्री निवास हे पुरुषोत्तम दी स्य भाव कृपा ग
 र भनिक रण ले विनि ग दर्श नया ॥ २६ ॥ **धृतराष्ट्र वावा ॥** नमो नमः कारणा वामना यना
 रायणा यामि त वि क्रमाय ॥ श्रीशंकर चक्रा सि गदाधरा यन मो हृत स्मे पुरुषोत्तमाय
 ॥ २७ ॥ देवता का कारण मा वामन अवतार भया का पराक्रम को ले खान भया का ॥ २७ ॥

खचक्रगदायधधायकासस्त्रायुरुयोत्तमलाईनमस्कारगर्हभनिधृतगष्टुलेः
 श्रीकृष्णकाचरणमाविंतिगर्दभया॥ २७॥ **गांधार्युवाच** मेवमाताचयितात्व
 मेवत्वमेवधुश्रसखात्वमेव॥ **त्वमेवविद्याद्रविगांत्वमेवत्वमेवसर्वममदेः**
वदेव॥ २८॥ हेनागयमेगमातायितानितिमिहोदाजुभाईसंगियनिति
 मिहो॥ **धनविद्यायनितिमिहोतिमिदेयिदोश्रोकोहिदेनभनिगांधार्युले**
 श्रीकृष्णकाचरणमाविंतिगर्दभया॥ २९॥ **दुर्योधनउवाच॥** जानामिधर्मनच
 मेधवृत्तिर्जानामियायनचमेनिवृत्तिः॥ **केनापिदेवेनहृदिस्थितेनयथानि**

पुक्तोस्मितथाकरोमि॥ २९॥ **धर्मकर्मयनिमैलेजांदेन.मैलेपापकर्मय**
निजांदेन॥ मेराहृदयमावस्थाकादेवताजोन्हातेदेवतालेगराउनुभ.
 याकाकाममैलेगशोभनिदुर्योधनलेविंतिगर्दभया॥ ३०॥ **यंत्रस्यगु**
रादोषेरायंत्रीतसुरुषोत्तम॥ अहंयंत्रोभवानयत्रीममदोषोनदीयते
 ॥ ३०॥ **यंत्रदोषलेहपुरुषोत्तमयंत्रमहंतपाईयंत्रीहनुहंछन॥** तसअ
 र्थहजूरवातजोकहलायोसाईमकहहु॥ **मलाईदोषनादिनुहोलाभनिदुर्यो**
धनले श्रीकृष्णकाहाविंतिगर्दभया॥ ३०॥ ॥ **दुपदउवाच॥** यज्ञेश

नंद गोविंद माधवानंनं केशव ॥ विष्णु को नो हृषीकेश वासुदेवन मोक्षुते ॥ ३१ ॥
 ॥ हे यज्ञेश हे गोविंद हे माधव हे अनंत हे केशव हे आनंद ॥ हे विष्णु को नो हृ
 षीकेश हे वासुदेवन पाई लाई नमस्कार छ न भनि दुय दर जोले स्तुति गर्द भ
 या ॥ ३१ ॥ ॥ जय द्रथ उवाच ॥ नमः कृष्णाय शुद्धाय ब्रह्मणे नमः मूर्तये
 ॥ योगेश्वराय योगाय त्वा म हं शरणा गति ॥ ३२ ॥ कृष्ण लाई शुद्ध लाई ब्रह्मा
 लाई अनंत मूर्ति लाई ॥ योगेश्वर लाई योग लाई नमस्कार गरि शरणा आ
 या को छु भनि जय द्रथ ले भगवान् लाई स्तुति गर्द भया ॥ ३२ ॥ ॥

विकर्ष उवाच ॥ कृष्णाय वासुदेवाय देवकी नंद नाय च ॥ नंद गोप कुमाराय गो
 विंदाय नमो नमः ॥ ३३ ॥ कृष्ण लाई वासुदेव लाई देवकी नंदन लाई ॥ नंद
 गोप कुमार लाई गोविंद लाई नमस्कार छ न भनि विकर्ष ले भगवान् लाई स्तुति
 गर्द भया ॥ ३३ ॥ ॥ सोम द्रथ उवाच ॥ नमः परम कल्याण नमस्तस्मिन् विः
 श्वभाविन ॥ वासुदेवाय शांताय यदुनां यतये नमः ॥ ३४ ॥ परम कल्याण
 स्वरूप भया को विश्व संसार मा भावे ना गरि सख्या को ॥ वासुदेव लाई शां
 त स्वरूप लाई यदु कुल का पति लाई नमस्कार छ न भनि सोम द्रथ ले भगवा
 न् लाई विंति गर्द भया ॥ ३४ ॥ ॥ वैराटि रु उवाच ॥ नमो ब्रह्मण्य देवा

यमो ब्राह्मणहिताय च ॥ जगदिताय कृष्णाय गोविंदाय नमो नमः ॥ ३५ ॥ वृ
 ह्मस्वरूपं देवतां ईगाई ब्राह्मणहितं गन्धर्वा लाई ॥ संसारहीनं गन्धर्वा लाई कृष्णला
 ई गोविंद लाई हात गन्धर्वा लाई यमि भगवान् लाई यमि वैराटि हले नमस्कार छुन
 भनिसुति गर्द भया ॥ ३५ ॥ ॥ शला उवाच ॥ अतसी पुष्प संकाश पीन वा
 संसदा युतं ॥ येन मस्यंति गोविंद न ते जा विद्यते भयं ॥ ३६ ॥ अतसी कुल मे
 स्थामवर्ष भया का पीतां वर ये हा का वारं वार मे रा पुणा मद्य ॥ जो न मनु ध्य ले
 गो विंद के न पुणा म गन्धर्वा लाई कते देधि भय हुं दे न भनि शला राजा ले विंति
 गर्द भया गोविंद के न ॥ ३६ ॥ ॥ बल भद्र उवाच ॥ कृष्ण कृष्ण कृष्ण लोचन मग

तीनां गति भव ॥ संसार सर्व मगना नां प्रसीद परमेश्वर ॥ ३७ ॥ हे कृष्ण हे कृष्ण
 हे कृष्ण निधान अगति का गति का हू नूर हो ॥ संसार रूपी समुद्र मा दुव्या कामः
 लाई प्रशं नुहु नुहु वर भनि बल भद्र ले आजा गर्द भया ॥ ३७ ॥ ॥ श्री कृष्ण
 उवाच ॥ सत्यं वी मिमनु जा स्वयं मूर्ध्वा ह्यो मां मुकुंद नर सिंह जनार्दन नेति ॥
 जीवन् जयन्त्यनुदिनं मम नाम मात्रं वै कुरु वासनित्यं सखे त्वं प्रयाति ॥ ३
 ८ ॥ आये भगवान् ले हात मा थिय थाई के न सत्य आजा गर्द ने जो न मानिसः
 ले म लाई मुकुंद नर सिंह जनार्दन भनि स्मरणा गर्दत ॥ पाषाण का थं जे जड भ

यायनितेसलाईमेरोनाममात्रणवैकुंठवासअभीष्टसिद्धिकलदिंछुभनिआ-
ज्ञागर्दभया॥ ३८ ॥ कृष्णकृष्णेतिकृष्णेतियोगांस्मरतिनित्यस॥ जलंभित्वा
यथापदंनरकादुद्धरामहं॥ ३९ ॥ कृष्णकृष्णभनिजोमानिसलेनित्यस्मर-
णागर्त्ता॥ तेसलाईजस्तोजलदेविकमलउपंद्वत्यसैनरकदेविउद्धरगर्दभ-
निश्रीकृष्णलेआज्ञागर्दभया॥ ३९ ॥ ॥महादेवउवाच॥ सकृन्नाशयसोः
तुत्कामुपाकल्पशतंतत॥ गंगादिसर्वतीर्थेषुस्नातोभवतिनित्यशः॥ ४० ॥
एकवेरनित्यनारायणकानामउच्चारणागर्दततिनशयकल्पयर्थत॥ गंगाः

दितीर्थविषयेस्नानगर्त्ताकाकलमिलद्धभनिश्रीमहादेवलेआगर्दभया॥
॥ ४० ॥ ॥यार्वतुवाच॥ तत्रैवगंगायमुनाचतत्रगोदावरीसिंधुसरस्वती
च॥ सर्वाणितीर्थानिवसंतितत्रयत्रास्तुतोद्धारकथाप्रसंगः॥ ४१ ॥ जाहाश्री
कृष्णकाकथाहाहुंछुनगंगायमुनागोदावरीसिंधुसरस्वती॥ इत्यादिभईकन-
यस्तानारायणभनिजानुभानिचारवतीलेआज्ञागर्दभया॥ ४१ ॥ ॥यम
उवाच॥ नरकेपचमानेतुयमेनपरिभाषितं॥ किंवयानाश्रितोदेवकेशवलेशना-
शकः॥ ४२ ॥ आप्राकर्मलेनरकविषयेयन्यामनुष्यसंपूर्णदुःखकननाश

गन्धानाशयराकेन ॥ कानभजनगरिनथोभनिबुझाउंछुभनियमराजालेः
 श्रीकृष्णकाहाविंतिगर्दभया ॥ ४२ ॥ ॥ नारदउवाच ॥ जन्मान्तरसहस्रेषु
 तयोध्यानसमाधिभिः ॥ नराणांहीरायायामांकुलेभक्तिप्रजायते ॥ ४३ ॥
 मनुष्यकादेहपायामासहस्रजन्मविषयेतयध्यानगर्दमा ॥ पापनाशहृद
 भनिनारदमुनीश्वरलेओझागर्दभया ॥ ४३ ॥ ॥ प्रह्लादउवाच ॥ माधयोः
 नितसहस्रेषुयेषुत्रेजामहं ॥ तेषुतेष्वन्यतेभक्तिरर्पितातुसदात्वयि ॥ ४
 ४ ॥ जौनजौन्योनिसामजालातनृतन्योनिसा ॥ हजूरमाभक्तिनहुटसभनि

कृष्णभक्तिवताउंछु

१०३
 पा

प्रह्लादलेविंतिगर्दभया ॥ ४४ ॥ याप्रीतिरविमुक्तीनांविषयेष्वनुयिनी ॥ न्वा
 मनुस्मरतेनित्यं हृदयामुपसर्पतु ॥ ४५ ॥ जस्तौअविवेकीलाईविषयदेविंदा
 मा ॥ मनजोदेनतस्तेतिमिलाईसमज्जदामा.मानरहसओरजगामानजावस
 भनिप्रह्लादलेविंतिगर्दभया ॥ ४५ ॥ ॥ विश्वामित्रउवाच ॥ किंतस्यदानैःकितीर्थैः
 किंतयोभिःकिमधरैः ॥ योनित्यंध्यायतेदेवनाशयराजगङ्गहं ॥ ४६ ॥ जसः
 लेनाशयराकाभक्तिरकचिन्नगरिगर्दततेसलेसंपूर्णदानधनिगयोतीः
 र्थधनिगयोतयस्याधनिगयो ॥ ध्यानयनिनित्यगयोभनिजानुभनिविः

श्वामित्रले आज्ञागर्दभया ॥ ४६ ॥ ॥ यमदधिहवाचनित्यो सवो भवेत्तेषां
 नित्यं श्रीनित्यमंगलं ॥ येष्वां हृदि स्थो भगवान् मंगलाय नमो हरिः ॥ ४७ ॥
 जस्का धरमा मंगलं हृजस्का हृदयमा भगवान् थियो नस्का धरमा ॥ नित्य
 उत्सव यनिहुं हृन नित्यमंगलयनिहुं हृन नित्यधनदृष्टियनिहुं हृन न
 नित्यमदग्निकृषीश्वरले आज्ञागर्दभया ॥ ४७ ॥ ॥ भारद्वाज उवाच ॥ ॥ ला
 भस्तेष्वां जयस्तेष्वां कुतस्तेष्वां यराजय ॥ येष्वामीं दीवरश्या मोहदयस्थोः
 जनार्दनः ॥ ४८ ॥ जस्का हृदय विषये ईं दीवरकमलयस्तेष्वां श्यामवर्णान्

याका जनार्दनं हृन नतनलाई ॥ लाभयनिहुं हृन जययनिहुं हृन यराज
 ययनिहुं हृन न नित्यभारद्वाज कृषीश्वरले आज्ञागर्दभया ॥ ४८ ॥ ॥
 गौतम उवाच ॥ गौकोटिदानं ग्रहणेषु काशीमाद्य प्रयागेषु युगकल्पवा
 सी ॥ सुमेरुतत्तुल्यहिरण्यदानं गोविंदगोविंदतत्तुल्यनामं ॥ ४९ ॥ कोटि
 गाईदानं गन्धाकोरग्रहणविषये काशीस्नानं गन्धाकोरमाद्यमा ॥ प्रयाग
 मास्नानं गन्धाकोरयुगकल्पवासगन्धाकोर ॥ सुमेरुपर्वतजत्रोत्थुष्टो
 वर्णदानं गन्धाकोरगोविंदकानामस्मरणं गन्धाकोवरोवरहृन न नित्यगोः



2493 I

श्रीगणेशाय नमः॥ प्रणम्य हृदि स्मर्य देवतां निरुद्धं विनायकं हृदयस्थं सुखं निरुद्धं

तं मया चरितं आज्ञागर्हयामा ॥ ४९ ॥ **अत्रिहवाच ॥** गोविंदेति सदा
स्नानं गोविंदेति सदा जयं ॥ गोविंदेति सदा ध्यानं गोविंदेति च कीर्तनं ॥ ५० ॥
सदा स्नानं यनि गोविंद हो सदा जयं यनि गोविंद हो ॥ सदा ध्यानं यनि गोविंद
हो कीर्तना यनि गोविंद हो भनि अत्रिहृषीश्वर ले आज्ञागर्हयामा ॥ ५० ॥
वसिष्ठ उवाच ॥ कृष्णेति मंगलं नाम यत्प्रवाचसि वर्तते ॥ भस्मी जवंति तस्या
धुर्महायातक कोटयः ॥ ५१ ॥ कृष्णं नाम मंगलं नाम जस्का वचनं कुरुते तस्य
कोटिं वापुः सैव शास्त्रमात्रे भस्म कुरुते भनि वसिष्ठ कृषीश्वर ले आज्ञाग

दर्शयाम् ॥ ५१ ॥ ॥ अहं धतिरुवाच ॥ कृष्णानुस्मरणादेव ध्यायसंघातयंजल
॥ शतधाभेदमाप्नोति गिरिवज्रहृतो यथा ॥ ५२ ॥ जसमनुष्यले अनेक गरि
राख्या कायाय श्रीकृष्णकास्मरणागम्याय धिजो नृजो नृधाय हरिं जो द्युन ॥ क
सो भं दूताई दुका वज्रले हान्या कायवत चूर्ण भूत भयाहे श्रीकृष्णकाप्रभा
वद्वन ननि अहं धति ले आज्ञागदर्शयाम् ॥ ५२ ॥ ॥ भृगुरुवाच ॥ नमा
मितं त्वगोविंद नाम तत्त्व शताधिकं ॥ तदासु चारणा मुक्तीं भवा नम्यं गयोगतः
॥ ५३ ॥ हे गोविंद अष्टांगयोग गरि पाउ न्या मुक्ति कन ॥ तुमानाउं मात्रे ले दिं

धुभनि भृगुरुवाच ॥ श्रीश्वरले आज्ञागदर्शयाम् ॥ ५३ ॥ ॥ लोमहर्षराउवाच ॥
नेमा मिना रायराया दयं कजं करो मिना रायरायूजनं सदा ॥ वदामि नाराय
ण नाम निर्मलं स्मरामि नारायण तत्त्वमवययं ॥ ५४ ॥ नारायण कन प्रणम
गर्धु सदा पूजोय नि नारायण का गर्धु ॥ नारायण का नाम लिं दु नारायण का
तत्त्व कन समुद्र नृध भनि लोमहर्षराउवाच ॥ श्रीश्वरले आज्ञागदर्शयाम् ॥ ५४
॥ ॥ शो न क उवाच ॥ स्मृतं सकलं कल्याणं भाजनं यत्र जायते ॥ पुरुषः
तमजं नित्यं व्रजामि शरणा हरिः ॥ ५५ ॥ जस्को नाम समुद्रं देमा सकलं क

ल्यागावर्द्धन ॥ यस्तपुरुषो नमनारायणकाशरराजोद्युभनिशोनकः ॥
 श्रीश्वरलेआजागर्दभया ॥ ५५ ॥ ॥ गगर्ग उवाच ॥ नारायणतिमंत्रोः
 स्तिवागस्तिवशवर्तिना ॥ तथाधिनरकेमूलायतंतीयद्रुतंमहत् ॥ ५६ ॥
 नारायणभयाकायोमंत्रं दृष्ट्वा देमावचनं आक्रुवशमा दृष्ट्वा देमा ॥
 नरकमा मूढमनुष्यहृकंसो यददृष्टुं नयो वडो अद्रुतं द्रुभनिगर्गं श्रीश्व
 रलेआजागर्दभया ॥ ५६ ॥ ॥ दालत्य उवाच ॥ किंतस्य वहुभिर्मंत्रैर्न
 क्षिर्यस्य जनार्दन ॥ नमो नारायणायतिमंत्रसर्वार्थसाधकं ॥ ५७ ॥ ज

नार्दनको भक्तिगर्वा मनुष्यलाई अरु वहुतै मंत्रकाँहिं द्य ॥ नारायणभया
 कामंत्रसर्वार्थसाधक हो भनि दालत्य कृष्ण आजागर्दभया ॥ ५७ ॥ वैतं पा
 यन उवाच ॥ यत्र योगेश्वरः कृष्णायत्रयार्थो धनुर्दुरः ॥ तत्र श्रीवि
 नयो भूतिं कृवा नीतिमतिर्मम ॥ ५८ ॥ आहा योगेश्वर कृष्ण न धनु
 दुरि अर्जुन द्य ॥ तहि जय द्य न लक्ष्मीयानि तहिर हं द्य ॥ ५८ ॥ ॥
 अंगिरा उवाच हरिहरतिथाया निदुष्ट चिन्ते रयि स्मृतः ॥ अनिदुष्टा यिसंस्पृ
 ष्येदहं तेव हि यावकं ॥ ५९ ॥ हरिकानामदुष्ट चित्तले स्मरणा गत्या यनिथा

यनयु भई जाछन ॥ जसो आगोलाई न जानिक न छोया यानियो लुछ तसो जे जानु
ननि अंगिराले आजाग दर्श भया ॥ ५९ ॥ ॥ यराशर उवाच सहुं दु चारितं ये
ना हरि रित्य क्षर द्यं ॥ वद्धापरिकरा न्ये न मोक्षाय गमनं प्रति ॥ ६० ॥ जसमनु
ष्यले हरि न न्यार स कवेर यनि उच्चारण गछत ॥ तसले मोक्ष हुन्ना वा दो कम
रवाधो भनि जानु न नियगु शर नृपीले आजाग दर्श भया ॥ ६० ॥ ॥ पुलस्त
उवाच ॥ हे जिहू कहु कहे हे संवदा मधुर प्रिये ॥ गोविंदना मयी यूखिय
वजिहू निरंतरं ॥ ६१ ॥ जसमनुष्यले रस को सार जांन्या जिहू को मधुर नि

को भांन्या अमृत रूपी नारायण को नाम धि वन्या गर भनि युलस्त कृपी श्व
रले आजाग दर्श भया ॥ ६१ ॥ ॥ व्यास उवाच ॥ सत्यं सत्यं युनः सत्यं सत्यं वा
विदुरो ब्रवीत ॥ नास्ति वेदात्परं शास्त्रं न देव केशवात्परं ॥ ६२ ॥ विदुर भंछन मैले
सत्यं श्रेयसि सत्यं शरीर भंछु ॥ अहं शास्त्रं देवि वेद शास्त्रं थुलो अहं देवता भंदाः
केशव थुलो विदुर ले भन्या को व्यास कहंछु ॥ ६२ ॥ ॥ मार्कंडेय उवाच ॥
स्वर्गदं मोक्षदं देव सुखदं जगतो गुरुं ॥ कथं मुहुर्न मयि न वासुदेवन चिंतयेत्
॥ ६३ ॥ स्वर्गदिना मोक्षदिना सुखदिना जगत्संसार को गुरु ॥ यस्ता वासुदेव

कनमुहर्तमात्रयनिचिंतमाकसोगरेनभनिमार्कडेयत्रपिलेआशागर्दभः
 या॥ ६३ ॥ **॥अगस्त्यउवाच॥** निमिषंनिमिषार्द्धवाप्राणिनाविष्णुचिंतनं॥ तत्रत
 त्रकुरुक्षेत्रंप्रयागंनेमिषंवनं॥ ६४ ॥ निमिषंभयोनिमिषार्द्धंभयोप्राणिलेविः
 शुकाचिंतनागर्दत॥ ताहाताहाकुरुक्षेत्रंप्रयागंनेमिषवनहोभनिअगस्त्यः
 वीश्वरलेआशागर्दभया॥ ६४ ॥ **॥वामदेवउवाच॥** निमिषंनिमिषार्द्धंवायेस्मरं
 निजनार्दनं॥ क्रतुकोटिसहस्राणांतेलेभंतेफलंचयत्॥ ६५ ॥ गोमानिखले
 निमिषंभंनुआवाचिन्देमानंनार्दनकनस्मरणागर्दततेसलेहजारकोटिजज्ञः
 शाकीफलयाईद्यभनिवामदेवलेआशागर्दभया॥ ६५ ॥ **॥शुकदेवउवाच॥**

च॥ आलोकासर्वशस्त्राणिविचार्यवपुनःपुनः॥ इदमेकंमुनिष्यंनंधेयोमारायणोहः
 रिः॥ ६६ ॥ अनेकशास्त्रमाविचारगरियेरिहेर्द॥ मारायणकाधानशुभलसमा
 नअकोटिनयेकहरिदुनभनिशुकदेवलेआशागर्दभया॥ ६६ ॥ **अगस्त्यउवाच॥**
 त्रयक्षरंयंब्रह्मगोविंदेतित्रियक्षरं॥ तस्मादुश्चरितंयेनंब्रह्मभूयायक
 ल्यते॥ ६७ ॥ गोविंदंनानातीनअक्षरपरंब्रह्मदुन॥ जसलेउच्चारणगर्दतयोवः
 हंहोईनांदुन॥ ६७ ॥ **वाधरायनिरुवाच॥** अच्युतःकल्पवृक्षोसोअनंतकाम
 धेनवः॥ चिंतामणिश्चगोविंदोहरिनामविचिंतयेत्॥ ६८ ॥ कल्पवृक्षंभन्याका
 अच्युतंदुनकामधेनुंभन्याकाअनंतंदुन॥ चिंतामणिंभन्याकागोविंदंदुनतस्का

रणहरिनामचिंतनागर्ज्ज ॥ ६८ ॥ ॥ हरिह्वय ॥ जयतु जयतु देवो देवकी नंदनो
 यं जयतु जयतु कृष्णो वृष्टिवंशप्रदीपः ॥ जयतु जयतु मेघश्यामलः कोमलांगो जय
 तु जयतु पृथ्वीभारणासो मुकुंदः ॥ ६९ ॥ देवकी कानंदन देवसर्वेभंडाध्वनवृष्टिवं
 शकादीयभयाका कृष्णसर्वेभंडावडाध्वन ॥ मेघजस्तोश्यामवर्णभयाका कोमलशः
 शीरभयाका सर्वेभंडावडाध्वन पृथ्वीकाभारको नाशगर्ज्जामुकुंदसर्वेभंडावडाध्वन
 भनिहरिले आशागर्दभया ॥ ६९ ॥ ॥ पिपलायन उवाच ॥ श्रीमन्नुसिंहविभवेन
 रुडं धजायता यत्र यो प्रशमनाय भवो मधाय ॥ कृष्णाय वृष्टिकजलाग्निभुजंगरो

वडा २

गालेशं वयाय हरये गुरवे नमस्ते ॥ ७० ॥ लक्ष्मीले संयुक्ते भयाकानुसिंहकारुण्यक
 नधायका से श्वर्यस्वरूपभयाका गरुडवाहनतायशको नाशगर्ज्जसंसारका ओष
 धिभयाका ॥ कृष्णनामभयाका यस्ता भगवान्ते वृष्टिकदेधि जलदेधि अग्निदेधि
 सूर्यदेधि रोमदेधिलेशदेधि दुःखदेधिरक्षागर्ज्जयस्ता कृष्णलार्ह हरिलार्ह गुरुला
 र्हे मेरा प्रणाम ध्वन भनि पिपलायनले आशागर्दभया ॥ ७० ॥ ॥ हविह्वय
 उवाच ॥ कृष्णत्वदीयपदपंकजं यं जरांतं अद्यैव मे विशतुमानस एजहंसः ॥ प्राः
 णप्रयाणसमये कफवातपित्तैः कंठवरोधनविधौ स्मरणं कुतस्ते ॥ ७१ ॥ हे कृष्ण

आपाउरु पीयिं जरा विषये आजेव शो स ॥ प्राण को प्रयाण भन्या को या आहुं दामातुं
आस्मरणा का हादेखि लाभ निहवि हो न ले आजाग दर्श भया ॥ ७१ ॥ ॥ विदुर
उवाच ॥ हरि नामैव नामैव नामैव मम जीवनं ॥ कलौ न स्तव्य ना स्तव्य ना स्तव्य गति
रं न था ॥ ७२ ॥ हरि का नाम देषि अर्को जीव ॥ विशेष गरि कलि युग विषये अर्को छि
न भनि विदुर ले श्री कृष्ण का चरण भाविंति गर्द भया ॥ ७२ ॥ ॥ शो न क उवा
च ॥ भोजे ना छो दने चि ता वृथा कुर्वति वैष्णवाः ॥ यो सो वि श्वं भरो देवः स भक्ता नि
मुये क्षते ॥ ७३ ॥ विष्णु भक्ति भया का मां छाले वार्थ चिंत ना गर्द न भोजन आछा

दन को यो विष्णु ॥ विश्वं भर संसार कन दाल ता भक्त कन कान न पादे न भनि शो न कले
आजाग दर्श भया ॥ ७३ ॥ ॥ महा देव उवाच ॥ शरीरे जर्जरी भूते बाधि गुल्ले क
ले वरे ॥ ओषधं जाहू वी तो यं वैद्यो ना रायणो हरिः ॥ ७४ ॥ यो शरीर मा बाधिले
गुल्ले भे श काय धि सा होय ना मा ॥ ओषधि गंगा जल हो वैद्य ना रायण हुन भनि
महा देव ले आजाग दर्श भया ॥ ७४ ॥ एवं ब्रह्मा दयो देवा ऋषयश्च तपोधना ॥
कीर्त्ति यं ती श्वरः श्रेष्ठ एवं ना राय णं विभुं ॥ ७५ ॥ यस्मा प्र कार संग ब्रह्मा दि
देव ता हरु लो मर्ष रा प्रभृति ऋषी श्वर हरु ले श्री ना राय ण क व व र्ण ना गरि

स्तोत्रगर्दभया ॥ ७५ ॥ इदं पवित्रमायुष्यं पुण्यं वायव्यप्रणशनं ॥ दुःस्वप्ननाशनं स्तो
 त्रं पांडवैरि कीर्तितं ॥ ७६ ॥ यो पांडव हरु ले श्री कृष्ण वन स्तोत्र गाय का कस्तो धन भः
 न्याय वित्र भया की आयुष्य वट न्याय पुण्य भया का ॥ पाय नाश ग ॥ हि दुःस्वप्न नाश
 ग ॥ हि भनि पांडव हरु आज्ञा गर्दभया ॥ ७६ ॥ यः पठेत्प्रातः तथा यशुचि स्तन
 तमा मसः ॥ गर्वा शतं सहस्रं सप्तमं दत्तं स्य यत्फलं ॥ ७७ ॥ यो मानि स ले सवे रि
 अधिक न शुचि भई श्री कृष्ण छे छे उ मन रा वि पांडव गीता पाठ गर्दभ ॥ यो मानि स ले
 एक लाख गाई दान दिया का फल पात्री छे न भनि आज्ञा गर्दभया ॥ ७७ ॥ तत्प

लं समवाप्नोति यः पठेदिन संस्तवं ॥ सर्वथाय विनिर्मुक्तो विष्णु लोकं स गच्छति ॥ ७८ ॥
 सर्वे वायु मुक्त भै यो पांडव गीता पाठ ग ॥ ले विष्णु लोक मा जां छे न भनि आज्ञा गर्दभया
 ॥ ७८ ॥ गीता गंगा न्याय श्री गोविंद ग रुद्र क्षज ॥ चतुर्गकार संयुक्त पुनर्जन्म विना
 ति ॥ ७९ ॥ गीता भयोग गंगा न्याय श्री गोविंद भयो ॥ यो चार गकार ले ज स्को संयु
 क छे त स्को फेरि ज नालि नु य दे न भनि आज्ञा गर्दभया ॥ ७९ ॥ ॥ अहं धति रुवा न ॥
 हुनाय वा सुदे वाय हरये परमात्मने ॥ प्रणामं क्लेश नाशाय गोविंदाय नमो नमः ॥ ८० ॥
 कृष्ण लाई वा सुदेव लाई हरि लाई परमात्मा लाई ॥ प्रणाम कन आ प्रदुःख क्लेश नाश ग ॥

गोविंदलाई नमस्कार धुभनि अहं धातिले आशा गर्द भया ॥ ८० ॥ वासुदेवात्मना यथा जय
 होमार्चनादिषु ॥ तस्या यथा धौ नैवा त्रततो यात्यधिकं फलं ॥ ८१ ॥ जसमानि सले जय गर्द
 मा होम गर्द मा पूजा गर्द वासुदेव भनि मन साधु नत ॥ तसलाई अयथा धौ कैले हुं देन अः
 धिके फल हुं देन भनि आशा गर्द भया ॥ ८१ ॥ वह वोयिन जानंति मोहिता मम मायः
 या ॥ सदा हृदि न रूपेण विचरामि महीतले ॥ ८२ ॥ असंख्यमानि सले यनि न जाना मिरामा
 यारूपले मोह गरि ॥ सदा ब्रह्मण रूपली पृथ्वी मंडल माहि डुंदु भनि आशा गर्द भया
 ॥ ८२ ॥ श्री कृष्ण श्री कृष्ण कलावतं संकं सप्रनाशन मुकुंद हरे मुगरे ॥ श्री यक्ष नाभ मुह

यो नमनार सिंह श्री राम राम धुनं दया हि विष्टो ॥ ८३ ॥ हे कृष्ण २ हे कलावतं संकं सना
 शक हे मुकुंद हे हरे हे मुगरे ॥ हे यक्ष नाभ हे पुरुषोत्तम हे नर सिंह हे राम २ हे रघुनंदन हे
 विष्टो मे गे रक्षा गर भनि आशा गर्द भया ॥ ८३ ॥ चित्रे मुकुंदः वदने मुकुंदः हृदये मुः
 कुंदः श्रवणे मुकुंदः ॥ एषां सदा सर्वगो मुकुंद स्नेमानवाः किं न मुकुंद तुल्यः ॥ ८४ ॥
 यो मानि सत्का चित्र मायनि मुकुंद मुख मायनि मुकुंद हृदय मायनि मुकुंद कान माय
 नि मुकुंद ॥ यस्यै सर्वत्र मायनि मुकुंद तो मानि स मुकुंद तुल्य कान हवे न मुकुंद तुल्य
 हुं देन भनि आशा गर्द भया ॥ ८४ ॥ गीतां यः पठते नित्यं श्लोकाद् श्लोकमेव च ॥ मु

यते सर्वथायेभ्यः विष्णुलोकं सगच्छति ॥ ८५ ॥ न समानि सत्ते सर्वे योऽप्युवगीताकाः
एकश्लोकं भयायति आधा भयायति श्लोकयद्गुणः ॥ तयोमानि संकोचाय सर्वे नाशुहिल
मृत्यु भयायति विष्णुलोकं माले जांछन् ॥ ८६ ॥ ॥ इति श्रीवाराहगीतास्तोत्रं
माध्वम् ॥ ॥

१ लक्ष्मी पूजा विधिः ॥ द व या त या ता स न . प द्म चा य . स ग ला ध ति
या त . स्व स्ति चा य . मा मा गू वा नु अ र्च या न ॥ पु दा व का ल म त त्वा य ॥
ध र्चा य ॥ द द्दि त य ॥ स र्चा र्च ॥ आ च म्प ३ ॥ अ द्या दि ॥ का न्थ
प र म ग म्प त ना मा हं व द्ध न धा न्य संप ति वि वृ द्धि का मः ल क्ष्मी
पू जा नि मि त्थ र्थ क र्त्तुं व द्ध न धा न्य अ र्च ने मः ॥ पू ष्यं न मः ॥ ध र्पी ॥

न्या सः अ र्च या न पू जा . ल थ ल पू जा ॥ आ वा रु ना दि वं द न क्ष
त पू ष्यं न मः ॥ ध नू मू दां द र्भ य त ॥ आ त्म न सिं च नं न मः वं द न . सिं
दू त . पू ष्यं न मः ॥ म त पू जा ॥ ग र लो म्प य न मः पू ष्यं वं द न . सिं दू त पू
ष्यं ॥ ॥ ल क्ष्मी पू जा आ स न त न ॥ ॐ आ धा ना य वृ स क र्थ न मः ॥
ॐ ग रू ग स ना य न मः ॥ ॐ कू र्मा स ना य न मः ॥ ध्या न ॥ ॐ आ सी
ना स न सी नू रू स्मि त मू र्खी रु स्तां वृ जे वि षु ती दा नं प द्म यु ग्म

तथैव प्रसादोदाभिनी सच्चि ए॥ मुक्तादाम विनाऊ मान पृथुला उं
गस्तनादाभिनी. पायादः कमलाकटाक विरवेना मंदयनी
रुतिं॥ लक्ष्मीध्यान पुष्पं नमः॥ पाशगतय॥ लक्ष्मीपाशं नमः॥ भू
र्यं नमः॥ वन्दनं नमः॥ सिंदूरं॥ यस्या पवीतं॥ पुष्पं नमः॥ शि
यांजलि॥ उं लक्ष्मीदवीयांजलि पुष्पं नमः॥ २॥ हृदया

दि॥ नात्रायण पूजा॥ उं नात्रायणाय नमः॥ वंदनं॥ सिंदूरं॥ य
स्या पवीतं पुष्पं नमः॥ पूजा॥ उं वृक्षं नमः॥ उं कुवेत्राय
नमः॥ उं धनदाय नमः॥ लक्ष्मीधूपं नमः॥ दीपं नमः॥ रुत
काय॥ रुतं नमः॥ नैवर्त्यं नमः॥ मधि॥ पक्वानं नमः॥ गा
यहाल॥ उं सुप्रतिष्ठारवतु॥ तसि॥ कृताकृत्य॥ उप॥ उं

धंत्रति प्रियाय नमः ॥ १० ॥ स्का ॥ नमस्तु सर्वदेवानां वनदासि
रुद्रि प्रिया ॥ यागमिस्तु त्वसंनानां स्त्रियास्तु दर्वना ॥ विश्वत्र
पस्य रार्थासि पद्ममालयगुरु ॥ महा लक्ष्मि नमस्तु त्वं स
खत्राणि कुत्र स्वम ॥ यात्राणि सर्वदेवानां यावद्वेत्राणि कृता ॥
संवत्सत्र प्रियाया वै साममास्तु सुमंगला ॥ अष्टपूजा विजा

विधानं तत्सर्वं विधिपत्रिपूर्वमस्तु ॥ नमस्कात्र ॥ दक्षिण
य ॥ लक्ष्मी देवी पूष्यं नमः ॥ न्यासलिकाय ॥ श्री लक्ष्मी पूजा संपू
र्णार्थं बृहन्नानवनमः ॥ पूष्यं नमः ॥ आचम्य ॥ विश्व ॥ पत्रि
दानयाचितस्वां काय राजन ॥ ॥ ॐ गि पूजा विधिः ॥ ॥

